Chap-2

अध्याय-2

हास्य-व्यंग्य काव्य की विकास यात्रा

अध्याय-2

हास्य-व्यंग्य काव्य की विकास यात्रा

1. व्यंग्य की परिभाषा और स्वरूप
2. भक्तिकालीन साहित्य में व्यंग्य
3. रीतिकाल में व्यंग्य
4. भारतेन्दुयुग में हास्य-व्यंग्य काव्य द्विवेदी युगीन हास्य-व्यंग्य काव्य
5. छायावाद युग
6. प्रगतिवाद युग
7. प्रयोगवाद
8. स्वातंत्र्योत्तर युग
9. आधुनिक युग

अध्याय-2

हास्य-व्यंग्य काव्य की विकास यात्रा

हास्य-व्यंग्य की परिभाषा एवं स्वरूप :-

हास्य और व्यंग्य के क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है।

प्रायः साहित्य के समस्त मिमांसकों का यह मत है कि जिस समय से साहित्य रचना का आरम्भ हुआ। उसी समय से व्यंग्य का भी आरम्भ हो गया। और व्यंग्य हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं में कुछ इस प्रकार मिला रहा कि उसका पृथक अस्तित्व स्पष्ट न होते हुए भी वह अपना प्रभाव आदि कवि वाल्मीकि की वाणी

मा निषाद प्रतिष्ठाम् त्वम् ममः शाश्वतीः समाः।
यत क्रौंच मिथुवादेक मवधीः काम मोहितम्।।

एक ओर करुणा से दृवित होकर फूटी तो दूसरी ओर निषाद के कुकृत्य ने उन्हें भर्त्सना करने के लिए भी प्रेरित किया। हिन्दी साहित्य के आदि काल से लेकर व्यंग्य के आदि स्वरूप या पूर्वजों की खोज की जाती है। तो व्यंग्य अनेक प्रकार से मिलता है। वह व्यंग्य आज के व्यंग्य की तरह इतना परिष्कृष्ट (विकसित) तो नहीं है। परन्तु अपना लक्ष्य-प्राप्त करने के लिए व्यंग्य का प्रहार आज के व्यंग्य की तरह ही तीक्ष्ण था। 1

भारतीय साहित्य की खोज करने पर पता चलता है कि व्यंग्य के बीज भारतीय वाङ्मय में भी उपलब्ध है किन्तु विश्व-साहित्य के संदर्भ में देखने से ऐसा

प्रतीत होता है कि व्यंग्य की उत्पत्ति सर्वप्रथम पाश्चात्य साहित्य में प्रस्फुटित हुई। हिन्दी साहित्य के निरीक्षण द्वारा ज्ञात होता है कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विद्यमान तो था। किन्तु इसकी न कोई परम्परा थी और न ही कोई निश्चित रूप था। हिन्दी साहित्य के भारतीय विद्वानों का मत है कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से ही पनपा है।

इस आधार पर यह औचित्यपूर्ण रहेगा कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य के विकास से पूर्व पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य के विकास का पर्यावलोकन कर लिया जाये इस विषय का विवेचन निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत किया जा रहा है।

1) पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य का विकास और 2) हिन्दी साहित्य में व्यंग्य का विकास। 2

1) पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य का विकास :

रोमन साहित्य में व्यंग्य : पाश्चात्य साहित्य में रोमन साहित्य में भी व्यंग्य का जन्म रोमन कामडी के रूप में हुआ। इटली में लोक संगीत और नृत्य करती टोलियाँ नाँचती, गाती, घूमती थी पाश्चात्य साहित्य के रोमन व्यंग्यकारों में हॉरेन ऐसे हैं जिनकी रचनाएँ उपलब्ध हैं। लूसीलियस के पश्चात् व्यंग्य लेखन में इनका स्थान आता है। हॉरेन दयालु स्वभाव के थे। इन्होंने व्यंग्य की कटुता को कम करके व्यंग्य की शैली को परिमार्जित किया। व्यंग्य में नैतिकता को स्थान दिया। हारेस से स्वयं को ग्रीक दार्शनिक माना और उपदेशक वाचन से प्रभावित माना है। हॉरेस आशावादी व्यंग्यकार थे। ये मानव और मानव जाति से प्यार करते थे। इनका विचार था कि बुराइयों से छुटकारा पाया जा सकता है और उनमें सुधार लाया जा सकता है। और इसी उद्देश्य से इनका व्यंग्य विध्वंसात्मक न होकर सहानुभूति पूर्व सुधार का भाव लिए हुए था। व्यंग्य का अस्तित्व भारतीय वाङ्मय में वैदिक काल से ही विद्यमान रहा है। **डॉ. रामखेलावन पाण्डे के अनुसार –** ऐसे तो व्यंगात्मक आवेश वेदों में मिल सकते हैं किन्तु नाट्य शास्त्र में व्यंगात्माकता के स्पष्ट संकेत हैं। सिद्ध साहित्य में पूजा-पाठ करने वाले पण्डितों, गंगा स्नानादि को पुण्य कर्म मानने वाले पौराणिक धर्मावलम्बियों पर व्यंग्य किये गये हैं।

व्यंग्य के विकास के संदर्भ संस्कृति साहित्य सिद्ध साहित्य, भक्ति कालीन तथा रीतिकालीन साहित्य में भी व्यंग्य की परिषुष्ट परम्परा का शुभारम्भ आधुनिक हिन्दी साहित्य से ही होता है।

2–हिन्दी साहित्य में व्यंग्य के विकास का दृष्टिपात :–

वैदिक साहित्य में व्यंग्य : साहित्य का सृजन तत्कालीन समाज में उपस्थित सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को देखते हुए होता है। जिस प्रकार समाज में परिस्थिति उत्पन्न होती है। उसी प्रकार का वर्णन साहित्य में प्रतिबिम्बित होता है। अतः व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य राज्य व धर्म में फैली विकृतियों, कुरीतियों अन्याय, दुर्बलताओं आदि को दूर करना है। अतः व्यंग्य का समसामयिक परिस्थितियों से घनिष्ट सम्बन्ध होता है। 3

संस्कृति साहित्य में व्यंग्य : यद्यपि संस्कृति साहित्य में व्यंग्य का सृजन हुआ है, किन्तु यह स्पष्ट हैं कि संस्कृत साहित्य में न तो व्यंग्य की कोई परम्परा बनी और न ही इसे स्वतन्त्र अस्तित्व मिल सका। संस्कृत काव्य शास्त्रों में भी व्यंग्य का उल्लेख अल्परूप में ही किया गया है। आदि काल के पुराणों और आख्यानों में तत्कालीन प्रचलित कुप्रथाओं, कुरीतियों और अन्यायों पर व्यंगात्मक प्रहार किये गये हैं। 4

प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में व्यंग्य : प्राकृत साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप प्रायः नगण्य रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राकृत साहित्य का सृजन अधिकांशतः धार्मिक मान्यताओं की स्थापना के लिए हुए था। सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य के इतिहास में हरिभद्र सूरि का नाम व्यंग्यकार के रूप में लिया जा सकता है।

अपभ्रंश साहित्य में सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में व्यंग्य फुटकल रचनाओं में मिलता है। सिद्ध सीधे - सादे मस्त - मौला जीव थे। वे पाखण्ड, बाह्यडम्बर एवं अन्धविश्वासों को नहीं मानते थे। इसीलिए सिद्धों ने तत्कालीन कुरीतियों, विसंगतियों आदि पर अपने दोहों, चौपाइयों एवं चर्यागीतों में उपहास उड़ाते हुए व्यंगोक्तियाँ लिखी।

वीरगाथा काल : हिन्दी साहित्य के आदिकाल या वीरगाथा काल के समय राष्ट्र अनेक विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था। चारों तरफ भ्रष्टाचार का समावेश था। पूरा देश उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था। भारत में चारों तरफ से उथल-पुथल के आक्रमण हो रहे थे। साथ ही देशी राज्यों में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, फूट एवं वैमनस्य व्याप्त था। राजनैतिक दृष्टि से राज्य राष्ट्र इस समय अराजकता विर्श्रखलता, अव्यवस्था से कसा हुआ था। और इस तरह की परिस्थितों में व्यंग्य लेखन उपयोगी सिद्ध होता है। 5

भक्तिकाल : राजनीतिक दृष्टि से यह काल भी अशान्ति और संघर्ष का ही काल रहा है। इस समय राजनैतिक परिस्थितियों में कोई स्थिरता नहीं थी। और न ही उनकी

कोई निश्चित नीति थी।

हिन्दी साहित्य के इतिहास के भक्तिकालीन कवियों ने अपने-अपने व्यंग्य का उल्लेख किया है और उस समय के समाज की विसंगतियों उजागर कियाँ है।

कबीर मूल रूप से भक्त ही थे। परन्तु उस समय की समाज की विसंगतियों और पाखण्ड को देखकर वे मौन नहीं रह सके। और अपनी अटपटी किन्तु प्रभावी वाणी से जो उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा वहीं उनके व्यंग्यवाण थे। आज हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विधा अपने निखार पर हैं। कबीर के युग में एक ओर जहाँ इस्लाम का खूब प्रचार हो रहा था। वहीं दूसरी ओर हिन्दू समाज अपने धर्म को बचाने का हर संभव उपाय कर रहा था।

भक्तिकालीन कबीर के युग में आचार-विचार धर्म, संस्कृति भाषा कहीं भी हिन्दू-मुसलमानों में किसी प्रकार की समानता न थी। और अपने धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने के प्रयास में दोनों के बीच खाई तो बढ़ती गई पर साथ ही आडम्बर को प्रश्रय मिला। और इस समाज के वातावरण में धर्म के नियम कठोरतर होते गये। और इस कारण ऊँच-नीच का भेदभाव पनपने लगा। कबीर के समय में ये कोमल पदों को नहीं अपितु व्यंग्य के प्रहारों से समाज के झकझोरने लगे। इस कार्य को करने के लिए उन्हें न मुसलमान का डर था और न हिन्दू का दोनों पर व्यंग्य का तीखा प्रहार किया है - 6

पंडित मुल्ला जो लिख दिया

छाँडि चले हम कछु न लिया

इस युग की सभी विसंगतियाँ, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक सभी परिस्थितियों पर कबीर को व्यंग्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस समय कबीर का मुख्य उद्देश्य समाज के पाखण्डी, काजी, मुल्ला। पंडित-ब्राह्मण आदि पर व्यंग्य करना था। उनका विश्वास था कि समाज में व्याप्त अंत विरोधों और विसंगतियों के मूल कारण ब्राह्मण की जप माल फेरना और मुल्ला को अल्लाह को जोर से पुकारते हैं आदि है। ये सब देखकर कबीर को अटपटा लगता और दोनों से सवाल कर बैठते हैं -

1) ''न जाने तेरा साहब कैसा है ?''

कबीर ने मुल्ला को बख्शते हैं न पंडित को तभी तो वे मुल्ला से पूछते हैं -

''मस्जिद भीतर मुल्ला पुकारे, क्या साहब तेरा बहिरा है ?''

और पंडित से कहते हैं -

''अंतर तेरे कपट-कतरनी, सो भी साहब लखता है''

कबीर के बारे में डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने ठीक ही कहा है - ''वस्तुत कबीर के लिए यह असंभव हो गया है कि कपटचोर के सहारे लूट-पाट मची रहे और वे देखते रहें। वर्णाश्रम धर्म के बहाने जनता को बहलाया जाय और वे कुछ न करें समाज के धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक सभी विसंगतियों पर कबीर में व्यंग्य किया है कोई भी इनके व्यंग्य बाण से अछूता नहीं रहा है। 7

कबीर समाज की हर परिस्थितियों से परिचित थे। और समाज की विसंगतियाँ उनकी छिपी न रह सकी। और इन विसंगतियों पर ऐसे तीखे प्रहार किये है। कि पढ़ने और सुनने वाला तिलमिला उठे। कबीर ने समाज की बुराइयों को दूर करने के उद्देश्य से अपने व्यंग्य का प्रयोग किया है।

कबीर के व्यंग्य तीखे होने का कारण यह था कि जन्म से ही कबीर को बाह्याडम्बर का सामना करना पड़ा था। इस कारण उनके मन में क्रान्ति की भावना का उठना स्वाभाविक और उस समय समाज की परिस्थितियों में अनेक परिवर्तन हो रहे थे। कबीर के व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य आडम्बर की प्रतिक्रिया दिखाना था। कबीर की दृष्टि में मूर्तिपूजा एक आडम्बर ही था। इसलिए कबीर कहते है।

''पाहन पूजै हरि मिलै, तो मैं पूजौ पहार
ताते या चाकी भली, पीस खाय संसार।''8

कबीर ने सामाजिक, दार्शनिक समाज के सभी व्यंग्यकार क्षेत्रों पर फैलती विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। कबीर ने समाज की विसंगतियों, रुढ़ियों, अंधविश्वासों की हंसी उड़ाने में उन्हें बहुत मजा आता था। इस काल में कबीर समाज में व्यंग्य का प्रहार करते थे उसी समय तुलसीदास, सूरदास, बाकीदास आदि की कृतियों में कहीं-कहीं व्यंग्य अवश्य मिलता है। तुलसीदास कृत 'नारद मोह', 'खल वन्दना' विंध्य के वासी उदासी में जो हास्य गोचर होता है उसकी रचना मानसिक विखंडता और विसंगति को आधार मानकर हुई है।

सूरदास के ''भ्रमरगीत'' में व्यंग्य के बहुत से उदाहरण मिलते हैं। इस व्यंग्य का मूल कारण मन की गंभीर वेदना था। इसलिए इस व्यंग्य की गहराई को समझा जा सकता है। 9

रीतिकाल में व्यंग्य : इस युग में राजनैतिक परिस्थितियों के अनुसार रीतिकाल वह युग

था जब भारतवर्ष में मुगल साम्राज्य अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर चुका था।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल के बाद रीतिकाल में अधिक व्यंग्य नहीं मिलता है। इस काल के कवि अधिकतर अपने आश्रय दाताओं, राजाओं के स्तुतिगान में या फिर नारी का सौंदर्य वर्णन करने में ही तृप्त, प्रसन्न हुआ करते हैं। इसलिए इस युग में हास्य-व्यंग्य प्रवाह वहाँ देखने को नहीं मिलता। ''बिहारी सतसई'' में व्यंग्य विनोद के कई उदाहरण मिल जाते है जैसे -

जपमाना, छापा, तिलक, सरै न एकौ काम।
मन - काँचे नाचे वृथा, साँचे-राँचे राम॥

यहाँ बिहारी कपट, आडम्बर, प्रदर्शन का विरोध करते हुए कहना चाहते हैं कि धर्म के विषय में जो आडम्बर करते हैं वे ईश्वर की सच्ची भक्ति के अधिकारी नहीं हो सकते। इस प्रकार बिहारी ने कभी ईश्वर के प्रति नीति सम्बन्धी, कहीं शृंगार विषयक, तथा अन्यत्र विविध सरस व्यंग्य विनोद्रोक्तियाँ, लिखी है, बिहारी की तरह केशवदास ने भी ''रामचंद्रिका'' में व्यंग्य-विनोद प्रस्तुत किये है।

लव द्वारा विभीषण पर किया गया व्यंग्य बहुत मार्मिक है। हिन्दी साहित्य में रीतिकालीन कवियों के प्रस्तुतीकरण को देखकर यही भाव उभरता है कि तत्कालीन कवियों का वैयक्तिक क्षोम उन्हें हास्य-व्यंग्य के लिए कदाचित प्रेरित करता था। इस काल के कवियों में व्यंग्य के क्षेत्र में सामाजिक लक्ष्य का आभाव था।

मध्यकालीन कवियों में हास्य-व्यंग्य सुनानेवालों में अमीर खुसरो का नाम नहीं भुलाया जा सकता। परन्तु कबीर की तरह और कवियों में समाज के ऊपर तीखे व्यंग्य का प्रहार नहीं मिलता है। कबीर समाज की विसंगतियों पर व्यंग्य का तीखा प्रहार किया करते थे। और समाज के सच्चे-चिंतक थे। कबीर अपने युग में व्यंग्य करने वालों में सर्वश्रेष्ठ थे। 10

कबीर के बाद चार सौ वर्ष तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में ''व्यंग्य'' का महत्व जानकर, पैने तीखे व्यंग्य कसकर समाज को सुधारने वाला कोई दूसरा साहित्यकार नहीं आया। 'अठारवीं शती के आगरा निवासी अली मुहिब खां, 'प्रीतम' की खटमल नाईसी' को देखते है। तो यह आभास होता है। कि उनकी रचना अवश्य की संस्कृति कवियों की हास्यानुकृति होने के कारण हिन्दी का प्रथम उदाहरण बन सकती हो 'खटमलबईसी' से इसका एक उदाहरण देखिए -

जगत के कारन करन चारों वेदन के
कमल में बसे सुजान जान धरिकै।
पोषण अवनि दुख-सोषन तिलोकन कै,
सागर में जाय सोंच सेस सेज करिकै।
मदन जरायो जो, सेहारै दृष्टि ही में सृठिति
बसे हैं पहार केऊ भजि हरबीर के।
विधि हरि हर और इनते कोई तेऊ
खाट पेन सोवैं खटमलन के डारिकै।

प्रस्तुत रचना का आधार भाव साम्य है। इसके पाश्चात् हमें 'इंदर सभा' की पैरोडी के दर्शन होते हैं। सन् 1953 में उस्ताद अमानत के 'इंदर सभा' नामक नाटक की रचना उर्दू में की थी। उनकी यह रचना नवाब वाजिद अली शाह के समय में जनता द्वारा बहुत सराही गयी थी। लोगों को इसके पद्यांश कंठस्थ हो गये थे। मदारी लाल का विकास अन्य कवियों के द्वारा एक सुव्यवस्थित रूप में हुआ। रीतिकालीन साहित्य में हास्य-व्यंग्य का विकास कम हुआ था। 11

भारतेन्दु युग में हास्य-व्यंग्य काव्य :-

1) भारतेन्दु युग (सन् 1850 से 1900 तक)
2) द्विवेदी युग (सन् 1900 से 1920 तक)
3) छायावाद युग (सन् 1920
4) प्रगतिवादी युग
5) प्रयोगवाद युग
6) स्वातंत्रयोत्तर युग (सन् 1947 से सन् 1960)
7) साठोत्तर युग (सन् 1960 से आज तक)

भारतेन्दु युग में हास्य काव्य व्यंग्य

भारतेन्दु युग सन् 1850 से 1900 तक हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वप्रथम हिन्दी व्यंग्य की एक सुव्यवस्थित धारा हमें भारतेन्दु युग में दृष्टिगत होती है। इस समय देश की सामाजिक राजनैतिक, आर्थिक सभी स्थितियाँ दयनीय थीं। इस युग में अंग्रेजों का शासन चल रहा था। और अंग्रेजों का तथा उनकी पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव भारत के समाज पर तेजी से हो रहा था। इस समय भारत एक दयनीय

स्थिति से गुजर रहा था। समाज की इन परिस्थितियों को देखकर डॉ. शान्ति प्रसाद वर्मा लिखते हैं कि ''भारतेन्दु युग'' में पश्चिम से एक ऐसी वायु वहीं थी। जिससे समस्त भारतीय जन-जीवन को प्रभावित किया। अनेक विनाशकारी रूढ़ियों को उखाड़ दिया गया और उनके स्थान पर नवीन-विचार उत्पन्न होते गये। भारतीय चेतना जागी और समाज में राजनैतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक आदि का नवांकुर होता गया। जीवन के सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होता दिखाई देने लगा। और उस युग में भारतीय समाज ने अपनी शक्ति, अपने गौरव और अपनी महान विरासत में लगी जंग को पहचाना। भारतेन्दु युग इस विचारधारा का प्रथम उद्‌बोधक था। इस युग में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का लोप होता जा रहा था। और पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का प्रभाव दिन पर दिन बढ़ रहा था। 12

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने भारतेन्दु युग के साहित्यकारों की परिस्थिति को वर्णित करते हुए लिखा है कि - ''मानसिक अपस्थान की दृष्टि से देखा जाय तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि इन लेखकों के मन में एक छुटन थी और वह चाहती थी निकलना। ब्रिटिश शासन में खुशामदियों का बोलबाला था। धार्मिक ठेकेदारों की तूती बोलती थी प्रेस ऐक्ट का भूत हर दम सिर पर सवार रहता था। हास्य-व्यंग्य के सहारे उन लोगों ने अपने मन का असंतोष प्रकट किया।'' 13

भारतेन्दु युग में हिन्दी काव्य में व्यंग्य का विकास मिलता है और अनेक पत्र-पत्रिकाओं में 'व्यंग्य' का विकास यहाँ निम्नलिखित रूप से हिन्दी काव्य की विकास याझत्रा का उल्लेख किया गया है- अनेक पत्र - पत्रिकाओं में 'व्यंग्य' का विकास मिलता है। यहाँ निम्नलिखित रूप से हिन्दी काव्य की विकास यात्रा का उल्लेख किया गया है।

सांस्कृति पुनरुत्थान का उद्‌बोधन और प्रतिगामी रूढ़ियों पर निर्मम प्रहार कविता में स्थान पाने लगे। इस युग में विधवा, विवाह, दहेज प्रथा आदि पर रचनाएँ की गई। 14

उर्दू और अंग्रेजी की कूटनीतिक तथा राजनीतिक संरक्षण मिलने के कारण हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास की गति में व्यवधान और शोषण दीख पड़ा। परिणामतः भारतेन्दु जी ने स्वयं इस सन्दर्भ में प्रेरक उद्‌बोधन किया -

निज भाषा उन्नति अहे, तब उन्नति को मूल।

बिन निज भाषा ज्ञान के मिटें न हिय को मूल।15

इस युग में समसामयिक राष्ट्रीय जीवन की अनेकानेक विकृतियों को लक्ष्य कर हिन्दी कविता में 'हास्य-व्यंग्य ही स्वतंत्र धारा का प्रवर्तन होने लगा। इस प्रकरण में 'भारतेन्दु जी की विख्यात मुकरियाँ तथा बाल मुकुन्द गुप्त की चर्चित कविताएँ स्मरणीय हैं। 16

भारतेन्दु-युग को राष्ट्रीय जागरण के युग के नाम से भी पुकारा गया है। इस काल में अंग्रेजी राज्य, अंग्रेजी की नीति के प्रति क्षोभ और क्रोध का प्रदर्शन होने लगा था। शिक्षित वर्ग में विदेशी शासन का रवैया देखकर एक क्रूर-कठोर आक्रोश की भावना घर कर गई थी।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार, ''उन्नीसवीं शताब्दी में रीतिकाल का अंत और आधुनिक काल का आरम्भ होता है। भारतेन्दु बाबू दोनों प्रवाहों के संगम-स्थल पर खड़े हुए हैं। इनके समय से कविता में अन्य प्रवृत्तियों में परिवर्तन हुआ वहाँ हास्य के क्षेत्र में भी नवीनता आई। हास्य के आलंबन अब सूम तथा अरसिक ही नहीं रह गए, सरकार के खुशामदी दंभी देश-भक्त-पुरानी रिवाज, फैशन, गुलाबी आदि पर हँसने की सामग्री मिलने लगी।'' 17

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य रचना कविता का प्रारम्भ इसी युग से हुआ। इस युग में पाश्चात्य सभ्यता का प्रारम्भ पराधीनता, अनेक प्रकार के कर, अकाल-महामारी, आदि ऐसी विषम परिस्थितियाँ थी। इस कारण इस समय वे रचनाकारों को हास्य-मिश्रित व्यंग्य लिखने की ओर प्रेरित किया। इस युग में समाज में व्याप्त विसंगतियों रिश्वतखोर, महाजन, एडीटर, पुलिस इनके ऊपर व्यंग्यबाण दृष्टिगोचर होते थे। उस समय के समाज में राजनैतिक परिस्थितियों का एक-एक दृश्य इस व्यंग्य से युक्त हास में प्राप्त होता है। 18

इस युग के कर्मठ रचनाकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र व्यंग्य कविताएं लिखने में भी सबसे आगे रहे हैं। इन्होंने अपने युग के व्यंग्यकारों को व्यंग्य लिखने की ओर प्रेरित किया है। अंग्रेजों पर भी इन्होंने व्यंग्य बाण किये है। जिसमें इनकी मुकरी प्रसिद्ध है।

''भीतर भीतर सब रस चूसै
हंसि हंसि के तन-मन-धन भूसैं
जाहिर वातन के अति तेज
क्यों सखि सज्जन नहीं अंग्रेज।''19

द्विवेदी युग :-

हिन्दी साहित्य के इतिहास में 1900 से लेकर 1920 ई. तक का कालकाण्ड इस युग के प्रेरणा-पुरुष एवं दिशा-दर्शक हिन्दी सेवा से विख्यात है। हिन्दी साहित्य में काव्य-विकास की दृष्टि से द्विवेदी युग महत्वपूर्ण माना जाता है। 1900 में सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वाधिक महत्व का कार्य हुआ है।

द्विवेदी युगीन हास्य-व्यंग्य काव्य – द्विवेदीयुग में हास्य-व्यंग्य कविता का विकास बहुत ज्यादा स्तर पर नहीं हो सका। कारण यह था कि इस काल के कवि युगीन सामाजिक सन्दर्भो की प्रखरता में नैतिकता, आदर्श और मर्यादाओं की स्थापना में समर्पित रहे। इस विषय में डॉ. जगदीश बाजपेई ने अपने शोध प्रबन्ध - ''आधुनिक ब्रजभाषा काव्य'' में विचार व्यक्त किया है कि सुधारवाद की सनक तथाकथित शिष्टता का अभिमान और गम्भीरता के थोथे ढोंग ने कवियों का इस दिशा में उत्साहपूर्वक कलम चलाने से रोका। इसके अतिरिक्त साहित्य क्षेत्र में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के व्यापक पर परोक्ष प्रभाव ने इस प्रकार की रचनाओं की सृष्टि में पर्याप्त बाधा डाली। आचार्य द्विवेदी स्वयं बड़े गम्भीर व्यक्ति थे और अपने स्वभाव के अनुरूप ही उन्होंने साहित्य की इस हल्की-फुलकी धारा को प्रोत्साहन नहीं दिया। 20

इस युग में मंचों पर श्रोताओं बचनेश एवं देहाती जी की हास्य व्यंग्य पूर्ण रचनाओं का आस्वादन अवसर प्राप्त होता रहता था। परम्परागत आस्वादन अवसर प्राप्त होता रहता था। परम्परागत विषय-वस्तु की हास्य-व्यंग्यपूर्ण उक्तियों का अस्तित्व श्रोताओं में गुदगुदी उत्पन्न करने में सफल रहता था किन्तु इस युग के हास्य-व्यंग्य में भी शालीनता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है।

कुछ उदाहराण दृष्टव्य हैं :

छीले पेड़ बबूल के तो अति बाढ़त गोंच।
काटे पेट गरीब को तो अति बाढ़त तोंद। 21

आज अन्नदाता तुम्हीं, तुम्ही हमारे लार्ड।
बारम्बार प्रणाम है, तुम्हें राशनिंग कार्ड। 22

ऋषिकेश चतुर्वेदी

इस प्रकार द्विवेदी पुराने मंचीय कविता को हास्य व्यंग्यवादी प्रस्तुति अपने

क्षणिक स्वरूप में ही सही क्रमशः विकास कर रही थी। इस युग में द्विवेदी युगीन मंचीय कविता की वस्तुगत प्रवृत्तियों में राष्ट्रीयता परम्परागत काव्यमूल्य और शिथिल रूप से हास्य-व्यंग्य की प्रधानता थी।

द्विवेदी युग में व्यंग्य ने हास्य को छोड़कर प्रहारात्मकता और करुणा को भी अपनाया। हास्य के साथ इस युग में रचित व्यंग्य में, गम्भीरता का विकास हुआ। द्विवेदी जी गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे और वे खड़ी बोली के परिष्कार और स्थापना में अपनी शक्ति लगाये हुए थें। वे पश्चिमी सभ्यता के कट्टर विरोधी थे। और आँखों पर पट्टी बँधकर उसका अनुकरण करने वालों से बहुत चिढ़ते थे। ऐसे काले साहबों पर उन्होंने ''कतूह-अल्हैत'' नाम से यह व्यंग्य लिखा-

अचकनु पहिरि बूट हम डांटा, बाबू बनेन डेरात डेरात,
लागे न जावे जाय समझ मां, कण्ठु फूटे तब बना बतात।
जब तक हमरे तन मां तनिकौ, रहा गांउ के रस का अंसु,
तब तक हम अखबार किताबैं, लिख की उजागर बंसु।

इसी प्रकार द्विवेदी जी ने और भी कई सामाजिक दुर्बलताओं पर अपनी कविताओं में कटाक्ष तथा व्यंग्य किए।

द्विवेदी युग में आते-आते उनके गुरु गंभीर व्यक्तित्व के अंकुश के कारण हास्य की धारा मंद गति को प्राप्त हुई स्थापित महाकवि शंकर, श्रीधर पाठक, पं. जगन्नाथ 'रत्नाकर' ब्रज कोकिल सत्यनारायण, 'कविरत्न' और पं. ईश्वर प्रसाद शर्मा आदि ने अनेक रूप से पैरोडी साहित्य की रचना सृष्टि की है।

पं. ईश्वरी प्रसाद शर्मा ने गोस्वामी तुलसीदास की चौपाइयों का परिहास मुलक अनुकरण किया है। इनका चना चबैना इसी प्रकार की पैरोडी इसमें नेताओं पर व्यंग्य किया गया है।

घन घमण्ड गरजत घोरा।
टकाहीन कलपन मन मोरा।।
बूंद आघात सहैं गिरि कैसे।
लीडर वचन प्रजा सहै जैसे।।
शूद्र नदी भरि चील उतराई।
जस कपटी नेता मन भाई।।

इसी प्रकार पं. ईश्वरी प्रसाद ने 'महन्त रामायण' में दोहों की पैरोडी की है।

यथा -

चित्रकूट के घाट पर भई लंठन की भीर।
बाबा खड़े चला रहे, मैन-सैन के तीर॥23

शर्मा जी ने चंदा मांगने वालों तथा वोट की भिक्षा माँगने वालों पर पैरोडी के द्वारा करारा व्यंग्य किया है।

''कोठी कार दिलावे वाला,
खुरचन खीर खिलाने वाला
घर भर को हरषाने वाला
भरता रहे रोज भण्डारा
चन्दा बनता रहे हमारा॥''24

द्विवेदी युग के कवियों ने काव्य परिहास (पैरोडी) की रचना की है। कान्तानाथ पाण्डेय (चोंच) ने भी अधिकतर पैरोडी की है 'सूर के पद' चरन कमल बंदौ हरिराई के आधार पर देखिए एक नमूना।

''बंदों विविध भांति निज वामा
जाकी कृपा दस बजे प्रातः मिलै चाय अभिरामा।''

तथा ''मैया कबहूँ बढ़ेगी चोटी''का हास्यानुकरण देखिए -

''अम्मा कब हूँगा मैं लम्बा।
कितना रोज पिया बालामृत किया किया हिटम्बा
पर न हुआ उतना ऊँचा जिता पानी का बम्बा।
तू कहती थी लम्बा होगा, होगा तुझे अचम्भा।
होगा वैसा गड़ा सड़क पर जैसा बिजली का खम्भा।
पर खम्भे की कौन कहे मैं हुआ न ऊँचा डण्डा।''

''चोंच''जी ने हरिऔध जी का परिहास गो. तुलसीदास के निम्नलिखित कवित्त के अनुकरण पर इस प्रकार किया है -

हरिऔध के द्वारा सकारे गया,
कर दाढ़ी पै फेरत वे निकसे,
अवलोकत ही मैं महाकवि को,
ठगा सा गया जे न ठगे धिकसे,
पढ़ने लगे धौपदे सेवे,

कभी झाँक भी लेते रहे चिकसे,

अपना सिर में भी हिलाता रहा,

वे सुनाते रहे कविता पिक से कवि श्री चोंच ने कबीर और रहीम के दोहों की भी व्यंग्यतात्मक पैरोडियाँ लिखीं है। देखिए

नेता ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय।

चन्दा सारा गहि रहे, देय रसीद उड़ाय। 25

इसी प्रकार द्विवेदी युगोपरान्त के बेधड़क बजारसी (काशीनाथ उपाध्याय) ने भी नरोत्तमदास रचित सुदामा चरित की सुन्दर पेरोडी की है। इसमें व्यंग्य की मार फुलझड़ी के समान है।

यथा -

''कोट फटा सा पतलून, छटा खानसामा

मूँछ कटा है छुटा हुआ वेस है

कौड़ी-सी आँख, पकौड़ी-सी नाक है,

हथौड़ी सी देह, सीकिया गाना

क्या बतलाऊं हजूर मैं आपको

होत पै दिखला रहा है डरामा।'' 26

इस युग में 1942 के आसपास काशी में सर्वश्री बेढ़ब जी रुद्र जी, चोंच जी भैयाजी बनारसी और बेधड़क बनारसी के रूप में हास्य रस के पंच-पाण्डव या पंचमहाथत प्रसिद्ध थे। बेढ़व जी और उग्र जी की हास्य रचनाओं में विविधता विंदग्धता एवं विशदता होती थी। स्व. 'बेधड़क' जी बेधड़क स्वीकारकरते थे कि चोंच जी उन सबसे सर्वाधिक तीखे थे। चोंच जी पिरौडी रचना के बादशाह थे। श्याम नारायण पाण्डेय की 'हल्दी-घाटी पर उन्होंने चूना-घाटी' लिखदी थी। हास्य-व्यंग्य की परम्परा आगे भी चलती रही और आज भी चल रही है।

इस समय श्री कान्तानाथ पाण्डेय 'राजहंस' चोंच का हास्य व्यंग्य क्षेत्र में योगदान दिया है। इसके उदाहरण हैं।

माँ बीवी दोऊ खड़ी काके लागू पाय।

बलिहारी माँ की बड़ी बीवी दीन्ह बताय।।

* * * *

शौहर से बीवी कहै तू क्या पीटे मोहि।
इक दिन ऐसा आयेगा मैं पीटूंगी तोहि ।।27

काशीनाथ उपाध्याय 'बेधड़क बनारसी का उदाहरण'

जिन्दगी है प्सेन्वेन्स अपने आप समझो।
इसके शब्दार्थ में ही पुण्य और पाप समझो ।।
ये जिन्दगी क्या है ? हे डैस, बुढ़ापा कामा।
बेधड़क मौत को बस एक फुलस्ताप समझो ।।28

उत्तर द्विवेदी युगीन व्यंग्य : उत्तर द्विदी युग से ई. 1944 तक के भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग में राजनीतिक, सामाजिक, परिस्थितियों में बहुत सी समानताएँ थी किन्तु उत्तर द्विवेदी युग से ई. 1944 तक की अवधि में परिस्थितियाँ तेजी से बदलती गई। सन् 1947 तक की अवधि में परिस्थितियाँ तेजी से बदलती गई। सन् 1947 तक तो विदेशी शासन चल रहा था किन्तु उसके पश्चात् भारत स्वतंत्र हुआ विदेशी तो यहाँ से चले गये किन्तु भारत को निर्धनता का सामना करना पड़ा। 29

भारतेन्दु युग तथा द्विवेदी युग के पश्चात् भारत में नित नई और अलग प्रकार की परिस्थितियाँ भी उत्पन्न हो रही थी। इन विपरीत परिस्थितियों के कारण साहित्य में व्यंग्य का आवश्यक स्थान रहा। बहुत से लेखकों ने अपने साहित्य द्वारा शोषण, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार का विरोध किया। इस कारण समाज की विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों के कारण विविध तरह से साहित्यकार व्यंग्य कसन लगे। किन्तु यहाँ केवल पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, सियाराम शरण गुप्त, प्रेमचंद तथा निराला को लिया जा रहा है।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी : बक्सी जी का नाम एक समर्थ निबंधकार के रूप में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। अपने रोचक निबन्धों में उन्होंने जीवन, समाज, साहित्य संस्कृति, धर्म की विविध समस्याओं पर विचार किया है।

सियारामशरण गुप्त : गुप्त जी ने लगभग पचास वर्षों तक साहित्य की सेवा की। गुप्त जी के साहित्य में शोषण, समाज कुरीतियों पर व्यंग्य किया गया है। इन्होंने समाज के सभी क्षेत्रों पर उनकी विसंगतियों पर विश्वविद्यालयों पर शिक्षकों तथा न्याय व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया है। 30

प्रेमचंद : प्रेमचंद ने अपने साहित्य द्वारा सिद्ध कर दिया है कि क्रांतिकारी भाषणों के बोझिल शब्दों के तरीकों को न अपनाकर सादे ढंग से लोकहित जनजागरण का प्रयत्न

किया जा सकता है। इन्होंने समाज के भ्रष्टाचार दुरुपयोग, कुरीतियों, अंग्रेज शासकों द्वारा निरीह जनता पर होने वाले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य का प्रहार किया है। प्रेमचंद का साहित्य व्यंग्य प्रधान ही है। आज तक कभी उन्हें ''व्यंग्यकार'' माना नहीं गया किन्तु उनके व्यंग्य की पैनी धार को तो सभी अवश्य मानते हैं। 31

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला : भारतेन्दु युगीन लेखकों के पश्चात् साहित्य में हास्य-व्यंग्य का सुन्दर व सच्चा रूप सामने लाने का श्रेय 'निराला' को मिलता है। निराला ने समाज का गहरा अध्ययन किया था। तथा जिन पर अन्याय होते देखा उनकी ओर से उसके विरोध में आवाज उठायी थी।

निराला के काव्य में व्यंग्य के उत्तम उदाहरण मिलते हैं। जिससे समाज की अनेक विसंगतियाँ सामने आती हैं। निराला के व्यंग्य हमेशा नये हुआ करते थे।

निराला व्यंग्य के प्रभाव को अच्छी तरह जानते थे। इसीलिए हास्य युक्त कविता हास्य-व्यंग्य से भरपूर रचना है -कटु यथार्थ-युक्त तथा करुण तीनों प्रकार के व्यंगय से वे सच्चाई सामने लाना चाहते थे। ''कुकुरमुत्ता'' कविता हास्य-व्यंग्य से भरपूर रचना है।

''पहाड़ी से उठा सर ऐठकर बोला कुकुरमुत्ता
अबे सुन बे गुलाब
भूल मत गर पाई खुशबू रंगोआन
खीन–चूसा खाद का तूने अशिष्ट।
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट
कितनों को तूने बनाया है गुलाम
माली कर रखा, सहाया जाड़ा–धाम।'' 32

''कुकुरमुत्ता'' दरिद्रों की, विपत्र और तिरस्कृत उपेक्षितों की आवाज है। उन्हीं का प्रतीक है। ऐंठकर कुकुरमुत्ता ''अबे'' कहकर गुलाब को संबोधित कर कहताहै कि अपना आप पर क्यों अपने आप पर क्यों गर्व करता है। तू औरों की सहायता से सुन्दर बना है। निराला ने इस कविता में पूंजीपतियों और साम्यवादियों पर करारा व्यंग्य किया है। जिससे कुकुकरमुत्ता गरीब और मजदूर और गुलाब को पूँजीपति की उपादि देकर उस पर व्यंग्य किया है।

इस युग के कवियों की कविताओं का व्यंग्य प्रहारात्मक है। उसमें हास्य नहीं दिखाई देता है। बल्कि गंभीर गहरा विडम्बनाओं और विकृतियों को उबारना वाला

व्यंग्य ही इस रचना में आया है। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में पैने और करुण व्यंग्य के अच्छे उदाहरण मिलते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह युग व्यंग्य की दृष्टि से बहुत समृद्ध नहीं रहा हो परन्तु तत्कालीन परिस्थितियों का अंकन करने वाला रहा है।

छायावाद युग – द्विवेदी युग के बाद 1920 के आस-पास छायावाद-युग का सूत्रपात्र हुआ। द्विवेदी युग की शुष्क इतिवृत्तात्मकता से ऊबे हुए तत्कालीन नवयुवक कवियों प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी आदि ने इस नई काव्य धारा में प्रवेश किया रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में छायावाद का प्रधान लक्ष्य काव्यशैली की ओर था, वस्तु विधान की ओर नहीं। इन कवियों की तुलना में व्यंग्य की दृष्टि में निराला का योगदान अधिक है। पंत की कविता में थोड़ा व्यंगय मिलता है। इस युग के कवियों में व्यंग करने की प्रवृत्ति अधिक नहीं उभरी है। करुण भावभूमि में अगंभीर होकर व्यंग्य करने की पहल निराला ने ही छायावादी कविताओं में की है और इनका इस क्षेत्र मं कार्यकरने का प्रयास हमेशा रहा है। 33

प्रगतिवादी युग : सामाजिक यथार्थवाद के नाम पर चलाया गया साहित्यिक आंदोलन प्रगतिवाद वस्तुता उत्तर छायावाद काल में विकसित हुआ। प्रगतिवाद ने ही सर्वप्रथम साहित्य को यथार्थवाद की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। प्रगतिवाद की पृष्ठभूमि में आर्थिक दैन्य, श्रमिकों का शोषण था। इस काल के समय सामाजिक शोषण अधिक हो रहा था। सामाजिक समस्याओं में व्यंग्यकारों की रचनाएं उभरकर सामने आयी। यथार्थ को अभिव्यक्ति देने की होड़ में छायावाद से निराला और पंत भी प्रगतिवाद की ओर अग्रसर हुए। स्वपनिल कल्पना लोक की उपेक्षा करके पंत जैसा प्रगतिवादी कवि भी मानवी विसंगतियों पर रचना करने लगा। पंत जी ने ताज कविता में अपार्थिक पूजन पर व्यंग्य किया है। मृत्यु के अमर और

''हाय मृत्यु का ऐसा अमर अपार्थिव पूजन
जब विषण्ण, निर्जीव पड़ा हो जग का जीवन।
संग-सौध में हो शृंगार मरण का शोभन
नग्न क्षुधातुर, वास विहीन रहें जीवन जन।''34

इस युग के कवियों में प्रगतिवाद में सामाजिक चेतना, युगक्षेम की चिन्ता मानवीय विषमताओं के प्रति असंतोष, धर्म और ईश्वर को मात्र अफीम समझने की प्रवृत्ति के कारण व्यंग्य के लिए अच्छी भावभूमि तैयार हुई। इस युग की समाज की

विकृतियों, विषमताओं पर व्यंग्य की दृष्टि डाली गयी है।

प्रयोगवाद युग – इस विशेष साहित्यिक प्रवृत्ति का आरम्भ 'तार सप्तक' (1943) के प्रकाशन के साथ माना जा सकता है। 'तारसप्तक' के सम्पादक अज्ञेय ने प्रयोग की व्याख्या करते हुए कहा था, प्रयोग सभी कालों के कवियों ने किये हैं। यद्यपि एक काल में किसी विशेष दिशा में प्रवेश करके कार्य करने की प्रवृत्ति स्वाभाविक है। हिन्दी में प्रयोगवाद का प्रादुर्भाब किन परिस्थितियों में हुआ यह जान लेना आवश्यक है। पहले छायावादी युग में अपने शब्द जाल से बहुत से शब्दों और बिम्बों के गतिशील तत्वों को जड़ बना दिया था। दूसरी ओर प्रगतिवादी कविता ने सामाजिकता की ओट मे विभिन्न भाव-स्तरों को एवं शब्द-संस्कारों को मात्र अभिधात्मक बना दिया था।

प्रयोगवादी कवियों में गम्भीर बातों को अगम्भीर ढंग से कहने की प्रवृत्ति भी पनपी। यह आकस्मिक नहीं है कि प्रयोगवाद के पहले ऐतिहासिक दस्तावेद 'तारसप्तक' में पहली कविता नैमिचन्द्र जैन की कवि गाता है एक व्यंग्य कविता ही है जिसमे कवि ने राज्य के राजा साहब, सरकारी अफसर, जनता के लीडर, कितने ज्ञानियों के स्वागत में कविता गाने वालों पर व्यंग्य किया है। व्यंगय की दृष्टि से तारसप्तक में भारतभूषण अग्रवाल की (अहिंसा) प्रभाकर माचवे की रेखा चित्र, 'देशोद्धारको से', 'वह एक', ' 'निम्न मध्यवर्ग' तथा कविता क्या है, रामविलास शर्मा की 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' आदि कविताएं उल्लेखनीय हैं। 35

इस प्रकार प्रयोगवाद ने माना कि कविता का विषय कोई भी हो सकता है। और इस विषय के साथ-साथ उसका शिल्प भी स्वयं विकसित होता है। हिन्दी कविता में नये-नये विषयों पर काव्य रचना के द्वार खोल दिये गये।

प्रयोगवाद युग में 'दुसरे सप्तक' में प्रकाशित भवानी प्रसाद मिश्र की कविता 'गीत फरोश' ने भी काव्य में व्यंग्य लिखने के लिए दिशाओं का उद्घाटन किया। इस प्रकार हम देखते हैं। कि प्रयोगवाद ने व्यंग्य को पथेष्ट मात्रा में अपनाया, उसके महत्व को स्वीकारा तथा भावी- काव्य रचना में व्यंग्य का मार्ग प्रशस्त किया। इस प्रकार इस युग में व्यंग्य समाज में उभर कर सामने आया। 36

स्वातंत्र्योत्तर युग – किसी देश के इतिहास में विदेशी सासन से मुक्ति निश्चय ही अद्भुत अनुभूति है। भारत के लिए सन् 1947 में ब्रिटिश शासन से स्वाधीनता प्राप्त करने का दोहरा अर्थ रहा। एक ओर देश विदेशी साम्राज्य से स्वतंत्र हुआ तो दूसरी ओर उसने राज्यतंत्र से प्रजातंत्र में प्रवेश किया। स्वाधीनता प्राप्ति की यह महत्वपूर्ण

घटना हमारे यहाँ दो कारणों से सहज रूप में ग्रहण नहीं की जा सकी। द्वितीय महायुद्ध के बाद भारत का स्वाधीन हो जाना कुछ अंशों में आकस्मिक रहा। और देश-विभाजन की स्थिति से जुड़ा हुआ रक्तपात, उत्पीड़न, अत्याचार, अमानवीय व्यवहार हमारी संवेदना को कुंठित और जड़ बना रहा था। ऐसी स्थिति में हिन्दी की विस्तृत काव्य धारा की प्रतिक्रिया होनी ही थी। 37

हिन्दी की विविध धाराओं के कवियों ने स्वतंत्रता का स्वागत अपने-अपने ढंग से किया है। द्विवेदी युगीन पुनरुत्थान की भावना से ओतप्रोत कवियों की दृष्टि में स्वाधीनता के आगमन के साथ-साथ भारत के गत वैभव का युग लौटकर वापस आने वाला था। इसलिए सैनिकों ने विजय घोष किया। छायावादी कवियों ने भी स्वाधीनता को आदर्श उपलब्धि माना। स्वतंत्रता प्राप्त के पश्चात् समाज में अनेक विसंगतियों का समावेश हुआ और इस समान में बुराइयाँ फैलती गई-चारों तरफ, चोर बजारी, रिश्वत पुलिस की घूसखोरी आदि की बढ़ोतरी होने लगी।

शिक्षा के क्षेत्र में भी शोषण फैल गया। सच्चाई के मार्ग पर चलने वाले मूर्ख समझे जाने लगे। विद्यालयों में पढ़ाई के अतिरिक्त और सभी कुछ होने लगा। परीक्षाओं में बिना पढ़े पास होने के लिए नई-नई भ्रष्ट पद्धतियाँ अपनाई जाने लगीं। जनता को स्वराज्य अथवा स्वाधीनता के प्रति कोई विशेष आकर्षण नहीं रह गया। सरकारी, कार्यालय अदालतें-बेईमानी भ्रष्टाचार के सुरक्षा संस्थान बन गए। 38

ऐसी परिस्थितियों में देश के साहित्यकार कवि के लिए यही आवश्यक था कि वह इन गर्हित परिस्थितियों पर संवेदनशील रहता हुआ प्रहार करता। और समाज की इन परिस्थितियों के कारण स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य का रंग उत्तरोत्तर जमता गया और यह व्यंग्य काव्य में अभिव्यक्ति का एक प्रमुख प्रकार बन गया।

वस्तुतः हिन्दी साहित्य में हास्य-व्यंग्य विधा का व्यवस्थित रूपेण विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में ही हुआ है। इस युग में हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में पैरोडी साहित्य को भी अपने स्वतंत्र विकास के लिए विविध आयाम गद्य और पद्य दोनों ही प्राप्त हो सके (स्वातंत्र्योत्तर का में हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में अनेक कवियों ने कार्य किया है। जैसे इस दिशा में हास्य शिरोमणि काका हाथरसी, बरसाने लाल चतुर्वेदी, कवि शतीशचन्द्रकमलाकर, शारदा प्रसाद, भुशण्डि और पदम्भूषण चिरंजीत पैरोडीदास) प्रभृति हास्य कवियों ने स्वतंत्र रूप से पैरोडी काव्य का प्रकाशन किया है। स्वातंत्र्योत्तर पैरौडी साहित्य की इसी परम्परा में कालीचरण गौतम, गोपाल प्रसाद व्यास, निर्भय

हाथरसी, कवि उदण्ड शैल चतुर्वेदी, अशोक 'अंजुम' चिरंजीलाल, पाराशर, परमानन्द, राम बहादुर, नरेन्द्र उत्सुक, सर्वेन्द्र कुमार मिश्र, इंदिरा इंदु, उदयशंकर सिंह, विजयदेव नारायण, श्री राधेश्याम झिंगन श्री राम आदित्य श्री कुल्हड़, काशीपुरी, कुंदन, चन्द्रशेखर पाण्डेय, 'चन्द्रमणि', गोपाल बाबू शर्मा, गुरु सक्सेना, कवि सूंढ, 'भोपू' और पटाखा से लेकर बालेन्दु शेखरतिवारी बापूराव देसाई आदि व्यंग्य कवियों ने योगदान दिया है। 39

काका हाथरसी ने चुनाव के समय होने वाले मतदाता ही प्रत्याशी का भगवान होता है। मनोकामना पूर्ति के लिए भगवान की भेंट-पूजा की जाती है। इसी स्थिति की व्यंग्यात्माक पैरोडी का रूप काका हाथरसी ने प्रस्तुत किया है।

''वोटर !'' तेरी सूरत से अलग
भगवान की सूरत क्या होगी ?
नेता ही नहीं मंत्री भी सो में पले तेरे
सर अपना झुका दूँगा मैं, कदमों के तले तेरे
बतला दो हमें बेखौफ जियर
एक पोत की कीमत क्यों होगा ? 40

*

जगह-जगह दे रहे, भव्य भाषण ऐसे ऐसे।
जीभ मुलायम किंतु शब्द निकलें पत्थर जैसे।41

काका हाथरसी ने समाज के बदलते हुए परिवर्तनों पर व्यंग्य किया है। समाज में पाश्चात्य सभ्यता का रंग चढ़ गया है।

देख पश्चिमी सभ्यता, मन में उठी उमंग
नई-नई फैशन दिखी, छैला बदले रंग
छैला बदे रंग, जमाना आया कैसा
लड़का है, लेकिन लगता है लड़की जैसा
स्वीव लैस बुरशर्ट, बदन से सटी हुई है
पैंट जीन्स की तीन जगह से फटी हुई है। 42

काका हाथरसी ने हिन्दी के हास्य-व्यंग्य के क्षेत्र में समाज की विकृतियों पर व्यंग्य किया है। समाज की न्याय व्यवस्था सरकारी तंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।

अफसर ऊँचे हैं वही,
जिनका ऊँचा पेट,
आवे आफिस में सदा, ढाई घंटा लेट।
अफसर जी के पेट की
नहीं किसी को थाह
दस हजार का खर्च है दो हजार तनुख्वाह। 43

आधुनिक समाज में दिन पर दिन भ्रष्टाचार की अधिकता बढ़ती जा रही है। इस बढ़ते हुए विकराल रूप को देखकर काका हाथरसी ने रिश्वत पर व्यंग्य किया गया है।

प्रभु की पूजा कर रहा, श्रद्धा से इंसान।
रिश्वत-भ्रष्टाचार के स्वामी हैं शैतान॥ 44

काका हाथरसी ने समाज पर होने वाले आर्थिक भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।

होय स्वार्थ में बावला
खाए नितप्रति घूस
पकड़ा जाए तब उसे गलती हो महसूस। 45

आज के आधुनिक परिवर्तन में स्वातंत्र्योत्तर कवियोने आज की परिस्थितियों पर व्यंग्य किया है। अशोक अंजुम के व्यंग्य को देखिए -

नोट झरे फूल से। वोट हुए शूल से।
वादे सभी हो गये, बाग के बबूल-से
और हम पड़े-पड़े, बूथ पर अड़े-अड़े
'अंजुम' उफ अपनी इंसल्ट देखते रहे
जमानत भी लूट गई, रिज़ल्स देखते रहे। 46

अशोक अंजुम ने आधुनिक युग में होने वाले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है जिसमें राजनैतिक क्षेत्र में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार का समावेश हो गया है। इस पर कवि ने व्यंग्य किया है।

पर्चे चिकके दीवारों पर, साब गाँव में आयेंगे
खबर गर्म घर-चौबारों पर, साब गांव में आयेंगे
कई साल पहले आये थे, भाषण देकर लौट गये
अब चर्चा सब घर-द्वारों पर, साब गाँव में आयेंगे

भूखों को रोटी देंगे और नंगों को कपड़ा देंगे
रौनक होगी बीमारों पर, साब गाँव में आएंगे।47

आजके राजनैतिक नेता समाज के कार्यों को कम करते हैं चुनाव जीतने के लिए अपना काम निकालते हैं।

समाज की आर्थिक व्यवस्था पर कवि ने व्यंग्य किया है। आज के आधुनिक युग में रिश्वत पर व्यंग्य किया है।

अपनी भी किस्मत जागे, फाइल खिसके यदि आगे।
कितना अर्सा बीत गया, याद नहीं हमको आता।
''पास नहीं फूटी कौड़ी'', बाबू अक्सर झल्लाता।
काम को वह रुपैया मांगे, फाइल खिसके आगे।48

अशोक अंजुम ने समाज में होने वाले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। समाज में सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार की अधिकता आज पुलिस तेज में सबसे ज्यादा भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, जिस पर व्यंग्य किया है।

हिटलर का अवतार सिपाही, अपनी तो सरकार सिपाही।
घर के अन्दर चोर घुसे हैं, बाहर पहरेदार सिपाही।
जेब काटकर करें गुजारा, उनका पालनहार सिपाही।
बढ़ा दबदबा रामसिंह का, उसका रिश्तेदार सिपाही।49

अशोक अंजुम ने शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है।

अब शिक्षा के देश में, बदल रहे उन्वान।
बिकें डिगरियां थोक में, हुआ खोखला ज्ञान।।
कथा में गुरुदेव ने डांटे कालूराम।
अब चौराहे पर पिटें गुरुवर श्री घनश्याम।।
अध्यापक जी यो कहें ट्युशन पढ़ लो आय।
जो कोऊ ट्यूशन पढ़े फर्स्ट डिवीजन पाय।।

समाज के राजनैतिक क्षेत्र में होने वाले भ्रष्टाचार पर व्यंग्य किया है। आज नेताओं के चरित्र पर व्यंग्य की अभिव्यक्ति ले. घनश्याम अग्रवाल ने की है -

संतुष्ट और असंतुष्ट के बीच, जबतक रस्साकसी जारी है,
तब तक मुख्यमंत्री बनने की, हर एम.एल.ए. की बारी है।50

स्वातंत्र्योत्तर युग के कवियों में कवि अल्हड़ बीकानेरी ने समाज पर व्यंग्य

किया है। पुलिस तंत्र पर भ्रष्टाचार किस तरह बढ़ रहा है। इस पर व्यंग्य किया है।

काव्य पाठ हेतु, मुझे मंच पे पहुंचना है
मेरी मजबूरी पे, पसीजिए दरोगा जी
ज्यादा माल-मत्ता, मेरी जेब में नहीं है अभी
पाँच का पड़ा है नोट लीजिए दरोगा जी
पौन बोतल तो मेरे पेट में उतर चुकी
पौवा ही बचा है इसे पीजिए दरोगा जी। 51

समाज के आधुनिक युग में प्रेमकिशोर पटाखा ने समाज के घोटालों पर व्यंग्य किया गया है।

कहीं बाढ़ कहीं सूखा
कभी मैं खाऊं, कभी तू खा
चाहे देश मरे भूखा।
उद्घाटन के दिन रेत की दीवार नीचे आ गई
ठेकेदार फिर भी बच गया
दीवार उद्घाटन कर्ता को दबा गई
कारण, दीवार बनाने में
अपनाए गए थे
फार्मूले नए
न लोहा न सीमेन्ट
एक्सपैरीमैण्ट, एक्सीलैण्ट। 52

अल्हड़ बीकानेरी ने समाज में मँहगाई के सम्बन्ध में व्यंग्य किया है।

आँसुओं में आज़ मैंने दाल को भिगोया
ओ री, मँहगाई, मुजे ऐसा क्यों बिलोया
ज्वार और बाजरे की बँध गई पुड़िया
दूध को तरस गई नन्ही-मुन्नी गुड़िया
कभी मेरी मातृ-भूमि सोने की थी चिड़िया
आज मैंने मिट्टी को भी सोने-सा
ओ री, महँगाई, मुझे ऐसा क्यो बिलोया। 53

समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के कारण लेखिका 'सरला भटनागर' ने

समाज में आर्थिक स्थितियों की विषमताओं पर व्यंग्य किया है।

रिश्तों में तकराव हुआ पैसे के कारण
भैयों में पथराव हुआ पैसे के कारण
माता भी अपने पैसे पर अब तो केस चलाती।
बहिनें भी अपने हिस्से पर लड़ने आती जाती,
इस पैसे ने प्रीति प्यारी की देखो नींव हिला दी।
पति पत्नी को भी तलाक की अब तो रीति सिखादी,
टूटन विघटन फैल रहा अब ऐसा। 54

कवि ओमप्रकाश आदित्य ने समाज में राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार पर व्यंग्य पंक्तियाँ लिखी है -

बेईमानी भारत की आधुनिक सभ्यता है,
संस्कृति टूटी कुटियों में फटे हाल है।
पतियों की तरह रोज पार्टी बदलती है,
राजनीति आज ऐसी हो गई छिनाल है,
कंचन कवच पहने भेड़ियें विचरते है,
चापलूस गीदड़ों की चाँदी जैसी खाल है,
भ्रष्टाचार देश में या देश भ्रष्टाचार में है,
दाल में है काला या काले में ही दाल है। 55

निष्कर्ष :- इस प्रकार भारतेन्दु हरिशचंद्र से पतलक्ति होने वाली हास्य-व्यंग्य काव्य की धारा आधुनिक विसंगतियों को विकसित होने के स्तर पर समानांतर ही विकसित होती गयी है -

हास्य-व्यंग्य काव्य धारा ने परिवर्तित मानव मूल्यों की प्रत्येक छवि का अंकन बड़े यथार्थ के साथ किया है। राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक आर्थिक एवं नैतिक मूल्यों के संदर्भ में जो बदलाव आते गए व्यंग्य कवियों ने प्रमुख रूप से अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है।

हास्य-व्यंग्य काव्य की धारा बड़ी तेज गति से विकसित होती गई है। आज पाँच में से तीन कवियों की रचनाओं में हास्य-व्यंग्य का रंग अवश्य पाया जाता है आज हास्य-व्यंग्य को व्यंग्येतर काव्य में नहीं खोजना पड़ता। व्यंग्य ने अपना स्वतंत्र मार्ग बना लिया है। साहित्य के मंदिर में समाहित हो पाया है। इसलिए हास्य-व्यंग्य अब एक स्वतंत्र विधा के रुप में स्थापित हो गया है। ✻

अध्याय -2

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा। पृ 61
2. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा। पृ.62
3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा। पृ.79
4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा। पृ.79
5. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबन्ध साहित्य में व्यंग्य डॉ. ऊषा शर्मा। पृ.81
6. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.37
7. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.38
8. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.39
9. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.40
10. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.41
11. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन - डॉ. भगवानदास नारायण कहार। पृ.23
12. प्रतापनारायण मिश्र की हिन्दी गद्य देन डॉ. शान्तिप्रसाद वर्मा। पृ.43
13. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.99
14. प्रतापनारायण मिश्रमन की लहर, प्रतापनारायण संथावली। पृ.116
15. भारतेन्दु ग्रन्थावली। पृ.512
16. भारतेन्दु ग्रन्थावली । पृ.810-811
17. वीणा नवम्बर 1937। पृ.25
18. भारतेन्दु युगीन व्यंग्य परम्परा ब्रजेन्द्रनाथ पाण्डेय। पृ.7
19. हिन्दी और गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ.24
20. डॉ. जगदीश बाजपेयी आधुनिक ब्रजभाषा काव्य। पृ.19
21. देहाती अभिनन्दन स्मारिका। पृ.17
22. आधुनिक ब्रजभाषा काव्य। पृ.168
23. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ 24
24. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ 25
25. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ.25
26. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ.26
27. पत्रिका व्यंग्य-तरंग पूर्वांचल हास्य-व्यंग्य परम्परा कृष्णकान्त एकलव्य। पृ.17
28. व्यंग्य-तरंग कृष्णकान्त एकलव्य। पृ.18
29. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.47
30. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.48
31. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.49
32. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.51
33. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.108
34. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.110
35. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.111

36. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.112
37. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.112
38. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ.113
39. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ.31
40. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् अन्य शोध-समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ.27
41. काका की तरंग काका हाथरसी। पृ.27
42. काका की तरंग काका हाथरसी। पृ.51
43. लूटनीति मंथन करी काका हाथरसी। पृ.10
44. लूटनीति मंथन करी काका हाथरसी। पृ.92
45. लूटनीति मंथन करी काका हाथरसी। पृ.152
46. हिन्दी गुजराती व्यंग्य साहित्य एवम् शोध समीक्षात्मक निबन्ध डॉ. भगवानदास कहार। पृ.27
47. भानुमति का पिटारा अशोक अंजुम। पृ.101
48. खुल्लम खुल्ला अशोक अंजुम। पृ.83
49. खुल्लाम खुल्ला अशोक अंजुम। पृ.68
50. हँसी के रंग कवियों के संग प्रेम किशोर पटाखा। पृ.59
51. हास्य कवि दरबार प्रेम किशोर पटाखा। पृ.42
52. हास्य कवि दरबार प्रेम किशोर पटाखा। पृ.55
53. भैसा पीवे सोमरस अल्हड़ बीकानेरी। पृ.77
54. सात देवरों से होली सरला भटनागर। पृ.14
55. हास्य-व्यंग्य के विविध रंग डॉ. बरसाने लाला चतुर्वेदी। पृ.84